(IJASSH) 2019, Vol. No. 7, Jan-Jun e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722

ईश्वर का स्वरूप : गाँधीजी के विचारों में

डॉ. सुधीर कुमार

ईश्वर प्रत्यय गाँधी विचार का वह केन्द्र विन्दु है, जिसके चतुर्दिक उनकी अहिंसा, सत्याग्रह, एकदाश व्रत आदि सब घूमता है। यही उनके समस्त विचारों का मूल है तथा यह विश्व का चरम तत्व है। यदि इनको किसी भी भक्त की तरह ईश्वर मत कहा जाए तो कोई भी अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि "ईशावास्यमिदं सर्व यत्किंच जगत्यां जगत्" उनके अंदर की श्रद्धा है। गाँधी-विचार में ईश्वर पर दो दृष्टियों से विचार हुआ है- एक धार्मिक दृष्टि से और दूसरा दार्शनिक दृष्टि से पहली दृष्टि विशेषतः उनके जीवन के पूर्वाद्ध में रही है तथा यहाँ उन्होंने ईश्वर का चित्रण मध्ययुगीन दार्शनिकों की भाँति ही किया है। दूसरी दृष्टि जिसमें ईश्वर को सत्य के रूप में देखा गया है, उनके जीवन की अनुभूतियों का अंतिम निष्कर्ष है। यहाँ गाँधी का विचार ईश्वर शास्त्र में पूर्णतः नावीन्य लेकर उपस्थित होता है। अतः इन दोनों दृष्टियों से गाँधी के ईश्वर की व्याख्या करना उचित होगा।

ईश्वरवादी दृष्टि के अनुसार ईश्वर एक प्रकार की अनिर्वचनीय रहस्यात्मक चेतना शक्ति का बोध कराता है जिसका पूर्ण विवरण देना मानव बुद्धि के परे है। वस्तुतः यह अनुभव के द्वारा ही समझा जा सकता है, फिर भी गाँधी ने थोड़ा बहुत इस शक्ति के संबंध में वर्णन करने का प्रयास किया है। हम इसी के आधार पर ईश्वर के गुणों एवं ऐश्वर्यों का अध्ययन करेंगे।

ईश्वर के गुणः

सुविधा के ख्याल से ईश्वर के सभी गुणों को हम चार वर्गों में विभाजित कर सकते हैं- सत्तात्मक, नैतिक, धार्मिक एवं ज्ञानात्मक गुण। हाँ ईश्वर के उपर्युक्त सभी गुणों को अलग-अलग कर देखने में गांधी की अभिरूचि नहीं रही है क्योंकि उनका चिंतन समग्र रहा है। अतः जब हम इन गुणों को अलग अलग कर देखते है तो हमारा यह आशय नहीं है कि ये गुण सचमुच अलग-अलग है। हमारा यह विश्लेषण केवल अध्ययन की सुविधा के लिए ही है।

सत्तात्मक गुणः

सत्ता की दृष्टि से ईश्वर विश्व की चरम सत्ता है तथा सभी प्रकार के परिवर्तनों के मध्य स्थाई तत्व है। यही सृष्टि का आधार स्त्रष्टा संहारकर्ता एवं पुन निर्माणकर्ता है। ईश्वर सच्चिदानन्द है सच्चिदानन्द का सत् सत्ता का बोधक है। ईश्वर एक सार्वभौम सत्ता है जिसके सिवाय अन्य किसी की सत्ता नहीं है। सार्वभौम होने के कारण वह निरपेक्ष रूप से सत्य है तथा सभी प्रकार के सापेक्ष सत्य इन निरपेक्ष सत्य में समा जाते हैं।

ईश्वर सभी प्रकार के भेदों से मुक्त है।"वह स्वयं न तो नर है और न नारी। उसके लिए न तो पंक्ति भेद है न योनि भेद। वह नेति-नेति है। वह केवल सत् अर्थात सत्ता है"। लेकिन यह सत्ता सत्य स्वरूप है जिसे गांधी ने एक प्रकार की अकथनीय अज्ञात तथा सर्वव्यापक शक्ति माना है। यह शक्ति विद्युत् शक्ति की भॉति कोई भौतिक शक्ति नहीं बल्कि एक चेतन शक्ति है। इसलिए इसे विशुद्ध चैतन्य एवं शाश्वत माना गया है। इस शक्ति का लाभ उसी को मिल सकता है जो इसके नियम को जानता है विद्युत् शक्ति का लाभ भी बिना

उसके नियम को जाने नहीं मिल सकता भिन्न-भिन्न धर्मों ने इसी शक्ति की साधना की है। राम, रहीम, गॉड, आदि इसी शक्ति के नाम है। इसलिए गाँधी ईश्वरीय नियम को जानने के लिए नैतिक अनुशासन का पालन आवश्यक मानते हैं।

कुछ पश्चिमी मनोवैज्ञानिक जैसे फायद, युंग आदि ईश्वर को मात्र मानवीय कल्पना की उपज मानते हैं गांधी के अनुसार ईश्वर काल्पनिक नहीं बल्कि वास्तविक शक्ति का नाम है। मनुष्य अपने मन में अनेक प्रकार से ईश्वर को चित्रित कर सकता है परंतु मनुष्य जो एक तुच्छ टहनी था नदी की रचना करने में असमर्थ है ईश्वर को कैसे अपने मन में रच सकता है? अतः ईश्वर ने मनुष्य की रचना की है यह विशुद्ध सत्य है।

गाँधी के अनुसार ईश्वर हम मानवों की भॉति व्यक्ति समान नहीं है। वह विश्व का सार्वभौम नियम तथा नियमक दोनों हैं, ईश्वर को नियम मान लेने से गाँधी की दृष्टि में बौद्ध-दर्शन जैसे प्रकट निरीश्वरवादियों का समाधान मिल सकता है, क्योंकि कर्मवाद के नियम में वे भी विश्वास करते हैं। यह नियम ईश्वर ही है। फिर जब गाँधी यह कह सकते हैं कि मेरा राम दशरथ पुत्र ऐतिहासिक राम नहीं है, वह शाश्वत तथा स्वयंभू है तो इसके द्वारा भी वे यह स्पष्ट करते हैं कि उनका ईश्वर व्यक्तित्ववान नहीं है परंतु व्यक्तिगत साधना की दृष्टि से अलग-अलग साधकों लिए ईश्वर व्यक्तित्वान एवं अव्यक्तित्ववान दोनों है। कोई साधक सगुण ईश्वर और कोई निर्गुण एवं निराकार ब्रहा की उपासना करते हैं, परंतु उनकी साधना की पद्दत्ति भिन्न-भिन्न हैं।

गाँधी एक ही ईश्वर की सत्ता में विश्वास करते हैं यद्यपि वेदों में अनेक देवी-देवताओं की चर्चा है, धर्मशास्त्र में विष्णु आदि के सहस्त्रनाम की परंतु इनके द्वारा एक ही सर्वशक्तिमान ईश्वर का बोध होता है। गाँधी का एकेश्वरवाद स्पिनोजा के ईश्वर की तरह सर्वभक्षी नहीं है। यहाँ मूल तत्व के एक होने पर भी अनेक तत्व की रक्षा अविरोधी समन्वय के सिद्धांत पर हुई है। यह एक दूसरी बात है कि गाँधी के एकेश्वरवाद में शंकर के अद्वैतवाद एवं रामानुज के विशिष्ट अद्वैतवाद दोनों का प्रभाव दीखता है। कभी कभी वे कहते हैं मैं अद्वैतवादी हूँ फिर भी द्वैतवाद का समर्थन करता हूँ। कभी वे यह भी कहते हैं कि मैं तत्व के बहुलवादी सिद्धांत को बहुत पसंद करता हूँ। इसलिए कभी वे जैन दार्शनिकों के आधार पर असर्जनात्मक एवं रामानुज की दृष्टि से सृजनात्मक पक्ष के मानते हैं।

इस तरह की विरोधात्मक बातें उपनिषदों में भी मिलती हैं। परंतु इनके द्वारा समन्वयात्मक दृष्टि की ही पुष्टि होती है, गाँधी की भी दृष्टि समन्वयात्मक थी, जिसका समाधान उन्होंने जैनों की अनेकान्त दृष्टि अपनाकर की है। यहाँ बहु-कोटिक तर्कशास्त्र का नियम चलता है। विनाबा ने इसे वितर्क कहा है। गाँधी ने ईश्वर के सत्य अर्थात् अतंरात्मा को वाणी भी कहा है। उसे प्रकाश स्वरूप तथा मानव-जीवन का आधार माना है, परंतु इतना होते हुए भी वह इन सभी प्रकार के गुणों से परे है।

नैतिक गुणः

गाँधी का ईश्वर एक सर्वव्यापक तो है ही लेकिन यह केवल सत्तात्मक ही नहीं मूल्यांत्मक भी है उसमें नैतिक एवं धार्मिक सभी प्रकार के मूल्य विद्यमान हैं। ईश्वर नैतिकता एवं निर्भयता है। वह प्रेम है ईश्वर के मूल्यात्मक स्वरूप को ही प्रकट करते हैं।

जैसा हम ऊपर देख आये है कि गांधी ईश्वर और उसके नियम दोनों को एक ही मानते हैं इसलिए उनके अनुरूप ईश्वर और कर्म दोनों एक ही वस्तु है। ईश्वरीय नियमों के द्वारा विश्व में व्यवस्था कायम रहती है। इसे विज्ञान की भाषा में खिंचाव या संयोग कहते है। "इस प्रकार ईश्वर केवल नैतिक गुण ही नहीं है वह नैतिक नियम भी है"। ईश्वर एवं नैतिक व्यवस्था दोनों को एक मानकर गांधी ने कर्मवाद एवं ईश्वर के बीच की खाई को भर दिया है। न्याय विशेष दर्शन में ईश्वर को मात्र निमित्त कारण माना गया है। नैतिक व्यवस्था की व्याख्या अदृष्ट नाम की अचेतना सत्ता के आधार पर हुई है, अतः ईश्वर एवं 'अट्टष्ट' के द्वैत से विश्व व्यवस्था की संगत व्याख्या नहीं

(IJASSH) 2019, Vol. No. 7, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

हो पाती है। ईश्वर का महत्व कुछ भी स्पष्ट नहीं होता, परंतु गाँधी का ईश्वर नैतिक नियम और नियमक दोनों होकर ऋग्वेद केत्रत् का काम करता है। ईश्वर कर्ता और कर्म दोनों है इसलिए विश्व की नैतिक व्यवस्था की व्याख्या संगत तरीके से हो जाती है।

जब हम कहते हैं- 'ईश्वर शुभ है, वह अन्यायी है' तो इसके द्वारा ईश्वर का तात्विक स्वरूप प्रकट होता है परन्तु जब वे यह कह सकते हैं कि शुभत्व ही ईश्वर है तो यह वाक्य विशुद्ध रूप से मूल्यात्मक हो जाता है और इसकी अभिव्यक्ति का व्याकरण प्रथम वाक्यों की अभिव्यक्ति के व्याकरण से बदल जाता है, परन्तु समग्र दर्शन में विश्वास करने के कारण गाँधी ऐसा भेद नहीं कर पाते। ईश्वर के नैतिक गुणों पर इतना अधिक जोर देने का यह कारण हो सकता है कि गाँधी शुरू से ही नैतिकवाद के समर्थक रहे। जिस नैतिकता को वे भूमि पर लाना चाहते हैं उसे तो ईश्वर के गुण होने ही चाहिए क्योंकि मानव तो उसी ईश्वर की संतान एवं कृति है।

धार्मिक गुण:

ईश्वर के धार्मिक गुणों में सगुण वैष्णववाद, निर्गुण रहस्य-वाद एवं पाश्चात्य मानवतावाद एक साथ सम्मिलित हो गए हैं। गाँधी जी ने हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यूहदी और पारसी सभी के धर्म ग्रन्थों का अध्ययन किया और उन सब में इस बात की एकवाक्यता मिली कि ईश्वर एक है और प्रत्येक धर्म या धर्मग्रन्थ के अनुसार उसके नाम अनेक हैं। ईश्वर के प्रमाण के लिए गाँधी जी इतिहास का भी साक्ष्य देते हैं। उनका कहना है कि ईश्वर का प्रमाण पैगम्बरों और ऋषियों-संतो की अटूट परम्परा के अनुभवों में मिलता है। ऐसे लोग प्रत्येक युग में प्रत्येक देश में हुए हैं। इस प्रमाण को न मानना अपने को न मानना है, क्योंकि हम भी उस ऐतिहासिक परम्परा कीलड़ा हैं और हम यदि उनके अनुभवों को नहीं मानते तो अपने अनुभवों को भी नहीं मान सकते।

गाँधी जी व्यावहारिक अधिक हैं। उन्होंने किसी सिद्धान्त तथा विचारधारा को उसके फल के अनुसार ही जॉचा है, यदि उसका फल ठीक है, तब वह ठीक है, अन्यथा वह गलत है। ईश्वर है या नहीं? इस प्रश्न का उत्तर गांधी जी ने अपने व्यवहार से दिया। ईश्वर है ऐसा मानकर वे चले और उनके प्रत्येक कार्यकलाप का यही आधार–सूत्र था।

पश्चिम में अस्तित्व दर्शन ने ईश्वर के प्रत्यय पर नया प्रकाश डालते हुए नये तर्क प्रयोग में लाये हैं। यास्पर्स और मार्सेल इसके प्रचारक हैं। गांधी ने भी इस दृष्टि से ईश्वर के प्रत्यय पर विचार किया है और अस्तित्वनिष्ठ युक्तियाँ दी है। इस प्रसंग में कई दृष्टियाँ है- "बुद्धि ईश्वर को जानने में शक्तिहीन है"। वह बुद्धि की पहुंच के बाहर है, किन्तु मुझे इसको विशद करने की आवश्यकता नहीं है। श्रद्धा इस प्रसंग में आवश्यक है। मेरा तर्क अनगिनत प्रमेय बना और बिगाड़ सकता है। कोई अनीश्वरवादी मुझे वाद-विवाद में परास्त कर सकता है, किन्तु मेरी श्रद्धा और मेरी बुद्धि में तीव्रता है और इस कारण मैं सकल संसार को ललकार कर कह सकता हूँ कि ईश्वर है, ईश्वर था और ईश्वर सदा रहेगा। गाँधी जी फिर कहते हैं बहुत सी वस्तुएँ हैं जिनका विश्लेषण नहीं किया जा सकता है। जिस ईश्वर को मेरी अल्पबुद्धि विश्लेषण करती है, वह मुझे संतोष नहीं दे सकती। इस कारण मैं उसका विश्लेषण नहीं कर सकता हूँ, मैं सापेक्ष वस्तुओं के पीछे निरपेक्ष सत् तक जाता हूँ और मुझे तब मनः शांति मिलती है। इसी प्रकार गांधी जी कहते हैं- 'क्या आप मुझे अंध विश्वासी समझते हैं? मैं अनीश्वरवादी से उर्ध्व हूँ'। दार्शनिक यस्पर्स की ही भांति गांधी जी कहते हैं "हम पर और संदेहवादियों पर शासन करने वाली कोई वस्तु है जो बुद्धि से अनन्त गुनी ऊँची है"। उनका संदेहवाद और दर्शन उन्हें जीवन में संकट के क्षणों में मदद नहीं करता। उन्हें किसी बेहतर चीज की, उनसे बाहर किसी चीज की, जरूरत पड़ती है जो उन्हें कायम रख सकती है। अगर ऐसी ही कोई मेरे सामने समस्या रखे तो मैं उससे कहूँगा कि तुम ईश्वर या प्रार्थना का मतलब तब तक नहीं जान सकते हो, जब तक कि अपने को शून्यवत् न बना लो। तुम्हें इतना नम्र होना है कि महसूस करो कि बुद्धि की विशालता और महानता के बावजूद तुम इस विश्व में महज एक कण मात्र हो। जीवन की वस्तुओं का केवल बौद्धिक प्रयत्न पर्याप्त नहीं है। आध्यात्मिक प्रयत्न बुद्धि से परे है और वही

संतोष दे सकता है। धनीमानी लोग भी संकट के क्षणों का अपने जीवन में अनुभव करते हैं, हालांकि वे धन दौलत से घिरे रहते हैं और उन चीजों से भी घिरे रहते हैं तो धन व दौलत से खरीदी जा सकती है फिर भी वे अपने जीवन के कतिपय क्षणों में अपने को पूर्णतया निराश और हतोत्साह पाते हैं। ये ही वे क्षण हैं जिनमें हमें ईश्वर की झाँकी मिलती है, हम उसका दर्शन करते हैं जो जीवन में हमारे हर कदम को चला रहा है। यहाँ अस्तित्व दार्शनिको की तरह गाँधी जी ने संकटापन्न क्षणों की अनूभूति को ईश्वर के सिद्ध करने वाली कहा है।

मार्सेल की तरह गाँधी जी रहस्य की लौकिक व्याख्या करते हैं जब वे कहते हैं कि ईश्वर एक रहस्य हैं तो उनका अभिप्राय यह नहीं है कि हम उसको नहीं सकते या हम उसको पा नहीं सकते। वे सिर्फ यह कहना चाहते हैं यह एक गुप्त शक्ति है इस तरह गाँधी जी की रहस्य शक्ति अलौकिक नहीं है वह बौद्धिक भी नहीं है। वह सत्य साध्य है। हृदय द्वारा लम्य है। इस का पूर्व लौकिक है। इसमें कोई रहस्यवाद नहीं है। गाँधी जी कहते हैं कि सच बात यह है कि ईश्वर एक शक्ति है, तत्व है, शुद्ध चैतन्य है, सब जगह मौजूद है, फि भी सब उसका सहारा पा नहीं सकते।

अस्तित्ववादी सर्व की भाँति गाँधी जी बलिदान में दुख में धीरज में अपने अस्तित्व को संपन्न पाते हैं और यद्वपि मात्र अनीश्वरवादी है, तथापि गांधी जी इस प्रकिया द्वारा ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध करते है, वह (ईश्वर) बहुत दीर्घकालीन सहनशीलता है। वह धीर है, पर भंयकर भी। वह मौजूदा संसार में और आने वाले संसार में भी सबसे अधिक ताड़ना देने वाला है। गाँधी जी कहते है ईश्वर प्रमेय नहीं है वह सभी प्रमाणों का प्रमाता है। यदि अपने संतानों द्वारा ईश्वर प्रमाणों का प्रमेय बन गया होता तो वह ईश्वर नहीं रहता गाँधी जी के मत को स्पष्ट करते हुए कि शोरलाल मशरूवाला ने कहा कि ईश्वर के आस्तित्व या नास्तित्व का व्याख्यान करने के पूर्व हमें दो भूलों को बचाना चाहिए। पहली यह कि प्रश्नकर्ता अपने समझाने में पूर्व ईश्वर को समझाने की कोशिश करता है। जब तक कोई अपने अस्तित्व को न समझा न सिद्ध करे न जाने तब तक ईश्वर के प्रति उसकी आस्था व्यर्थ है, जैसे-जैसे अस्तित्व की आत्मा के अस्तित्व की समझ बढ़ती है, वैसे-वैसे ईश्वर के प्रति हमारा दृष्टिकोण बदलता जाता है। अतः जो ईश्वर के विषय में स्पष्ट ज्ञान रखना चाहता है, उसे सर्वप्रथम अपने अस्तित्व के स्वभाव के विषय में स्पष्ट ज्ञान रखना चाहिए। दूसरी भूल पहली भूल से आत्मा की नासमझी से उत्पन्न होती है। दूसरी भूल है ईश्वर को प्रमेय या अप्रमेय समझ लेना, चूँकि आत्मा प्रमेय नहीं है, अप्रेमय नहीं है न विषय है और न अज्ञेय, इस कारण ईश्वर भी ऐसा नहीं है। आत्मा शुद्ध चैतन्य या ज्ञानस्वरूप है तो ईश्वर भी ऐसा ही है। ईश्वर की सिद्धि इस प्रकार आत्मज्ञान रखने वाले ही कर सकते है।

कुछ लोग गाँधी जी को रहस्यवादी सन्त मानते हैं। रहस्यवादी हम उन लोगों को कहते हैं, जिन्होंने ईश्वर का साक्षात् दर्शन कर लिया हो और जो दूसरों को भी ईश्वर का साक्षात् दर्शन करा सके। गांधी जी ने अपनी आत्मकथा में ऐसे दर्शन को सम्भव बताया है पर यह माना है कि उन्हें ऐसा दर्शन नहीं हुआ है। वे सदैव यह मानते रहे हैं कि ईश्वर को आंखों से प्रत्यक्ष देखने में और उसे बड़ी दूर से सत्य के रूप में जीता जागता देखने में बहुत बड़ा अन्तर है।

ईश्वर को प्रत्यक्ष देखने वाले रहस्यवादी कहे जाते हैं, ईश्वर को सत्य के रूप में दूर से देखने वाले दार्शनिक कहे जाते हैं। इस प्रकार हम गाँधी जी को रहस्यवादी नहीं कह सकते।

यदि हम ध्यानापूर्वक देखे तो ईश्वर को मददगार, रहनुमा और हकीम मानना वस्तुतः रहस्यवादी धारणा नहीं है, बल्कि बहुत कुछ ईश्वर के प्रयत्न के अर्थ पर निर्भर है। गांधी जी के अनुसार ईश्वर स्वास्थ्य है, जीवन है, नैसर्गिक चिकित्सक है। जब वे ऐसा कहते हैं तो उनका अभिप्राय यह है कि ईश्वर मूल्य है। ईश्वर को पथ-प्रदर्शक या रहनुमा कहने का भी यही अभिप्राय है। चूंकि गाँधी जी समस्त

संसार की धारणा मूल्यों के रूप में करते हैं और उन मूल्यों की मूल्यता को ईश्वर मानते हैं, इस कारण उनकी धारणा है कि मदद या पथ प्रदर्शन ईश्वर से मिलता है। गाँधी जी ने इस प्रसंग में अपने मत को स्पष्ट कर दिया है कि जिसे ईश्वर में विश्वास नहीं है, जो ईश्वर के लिए अपने को बलिदान नहीं कर सकता, उसे प्रार्थना जप आदि से कोई लाभ नहीं हो सकता, उसे ईश्वर मदद कर नहीं सकता, अतः हमारा मत है कि गांधी जी की उक्त धाराणएँ प्रचलित रहस्यवाद की धारणाएँ नहीं हैं। वे गांधी जी के संकल्प, व्रत और निश्चय का परिचय देती हैं, जो यह बतलाती है कि गांधी जी ने ईश्वर को कितना व्यापक मूल्य समझा है।

ग्रन्थसूची :-

1. विजयश्री चन्द्र महात्मा गाँधी का धर्मदर्शन, पूर्वलिखित।

2. विवेकानन्द साहित्य, खण्ड एक, पूर्वलिखित।

3. विजय श्री चन्द्र, पूर्वलिखित।

4. विवेकानन्द साहित्य, खण्ड एक।

5. विवेकानन्द, विवेकानन्द साहित्य, खण्ड एक।

6. विजय श्रीचन्द्रः महात्मा गाँधी का धर्म दर्शन।

7. विवेकानन्द साहित्य, खण्ड तीन, पूर्वालिखित।

8. विनोबा भावे गीताई चितनिका।

9. वसंत नारगोलकर, The Creed of St. Vinola Bhave, Bomboy, Bhartya Vidya Bhavan।

10. विनोबा भावे, आत्म ज्ञान और विज्ञान।

11. M.K.Gandhi, the Supreme Power।

12. Whilst everything around me is everchanging, everdying,
There is underlying all that change a living power that is
Changeless, that hold altogether, that creates dissolves and
Recreates that imorming power or spirit is God, उपरिवत।

13. गाँधी, प्रार्थना- प्रवचन, (नई दिल्ली, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन 1953)।

14. गाँधी, हरिजन- 22.6.47

15. The psycho analysis of Indivisual human beings, however teaches us with guite special insistence that the God of each of them is formed in the likeness of his father, that his personal relation God is

(IJASSH) 2019, Vol. No. 7, Jan-Jun **e-ISSN: 2455-5150, p-ISSN: 2455-7722**

nothing other than an exalted Father- Frend, Sigmund, Totem and Tatoo, (London Rout Ledge- Kegan Paul ltd, 1950).

16. Dasrath Singh, "Jungs' approach to religion Resurch Journal of Philosophy (Ranchi on P.M. Dept. March 1977, Voll No.1).